

MAITRUP. 3, 1. MBH. 6, 2944. 13, 773. WEBER, RĀMAT. UP. 332. RAGH. 18, 23. PRAB. 70, 1. BHĀG. P. 2, 2, 14. 3, 14, 40. 6, 8, 20. 9, 4, 59. WEBER, KĀSH-
NĀG. 289. 295. SARVADARĢANAS. 96, 21. 97, 6. VERZ. d. B. H. 147, b (98).
○लिङ्ग ebend. (99). — b) N. pr. verschiedener Männer VERZ. d. Oxf. H. 153, b, 25. 226, b, No. 335. 228, a, 36. 262, b, No. 633. 274, b, No. 631. fg. 277, a, 8. VERZ. d. B. H. No. 1403. HALL 6. 70. 182. 123. विश्वेश्वराग्रम् 28. ○तीर्थ VERZ. d. Oxf. H. 380, a, No. 401. ○पण्डित HALL 106. ○पूज्यपाद 97. ○भट्ट VERZ. d. Oxf. H. 292, b, 15. ○मिश्र 133, a, No. 244. ○सस्वती 343, c. VERZ. d. B. H. No. 626. IND. ST. 1, 1. HALL 108. 119. 136. fg. = विश्वेश्वरानन्दसस्वती 119. 143. COLEBR. MISC. ESS. I, 337. — 2) f. ई a) die Herrin des Weltalls VERZ. d. Oxf. H. 80, b, 31. — b) eine best. Pflanze VARĀH. BRH. S. 48, 39. — 3) wohl n. N. pr. einer Oertlichkeit VERZ. d. Oxf. H. 39, a, 36. b, 27. — Vgl. भट्ट°.

2. विश्वेश्वर (wie oben) = 2. विश्वेश VARĀH. BRH. S. 10, 15. 15, 19.

विश्वेश्वरदत्त m. N. pr. eines Mannes: ○मिश्र HALL 2. 12.

विश्वेश्वरस्थान n. N. pr. einer Oertlichkeit MBH. 13, 7649.

विश्वेकसार (विश्व - एक - सार) n. N. pr. eines heiligen Gebietes RĀGĀ-
TAR. 3, 44.

विश्वैज्ञस् (विश्व + ज्ञा°) adj. allkräftig RV. 10, 55, 8. ÇĀKṢH. ÇR. 16, 18, 4.

विश्वैषध (विश्व + षौ°) n. Panacee d. i. trockner Ingwer RĀGĀN. im ÇKIDR. AUSH. 21.

विश्वैकी s. विश्ववक्.

विश्व्या (von विश्व) adv. irgendwo RV. 2, 42, 1. = सर्वतम् Nib. 9, 4.

1. विष्, वेवेष्टि, वेविष्टि (व्याप्ति) DĀTUP. 23, 13. P. 7, 4, 75. अवेवेष्टि, अ-
वेविष्टि, वेविष्प्यात्, वेविष्पति P., Schol. im VEDA und in den BRĀHMANA:
वेवेष्टि, विविष्मस्, अविवेष्टि, विवेष्टि, अविवेष्टि, विवेष्टि, वेवेष्टि, वेवि-
ष्पति, वेविष्प्यात्, वेविष्पत्; पर्यवेष्टि episch; अविष्पत् und अविष्पत् Vop. 8, 38. 10, 9. विवेष्टि, विविष्पत्; वेष्टयति (vgl. KĀR. 6 aus SIDDH. K. zu P. 7, 2, 10) P. 8, 2, 41. Schol. विष्टि°; partic. विष्टि°. 1) wirken, thätig sein; zu Stande bringen, ausrichten, thun: समौ चिह्नस्ते न समं विविष्टि: RV. 10, 117, 9. अस्मै वयं यद्वावान् तद्विविष्म: 6, 23, 5. अविष्टि रपांसि 31, 3, 1. 69, 8. अर्थं दिवे दिवे विविष्पुप्रमृष्यम् 6, 32, 5. अर्पांसि नर्पाविष्टि: 4, 19, 10. तद्विविष्टि यत् इन्द्रो जुज्ञोषत् 8, 83, 12. 1, 27, 10. विश्वं सत्यं कृणुहि विष्टमस्तु 3, 30, 6. यामिर्विविष्टो धीभि: 7, 37, 5. वेवेष्टि यज्ञम् ÇAT. BR. 1, 1, 2, 1. यस्य कृव्या वेविष्टिद्विष: RV. 8, 19, 11. ब्रह्मचारी चरति वेविष्टिद्विष: 10, 109, 5. इन्द्रेणैते तत्सर्वा वेविष्पाणा अयो न मृष्टा अधवत् नीची: etwa so v. a. unterstützt von Indra 7, 18, 15. — 2) dienend thätig sein oder ausführen, dienen: तावत् इन्द्र मतिमिर्विविष्म: RV. 6, 23, 6. यो भूयिष्ठं नास्तथाभ्यां विवेष्टि 5, 77, 4. अन्यस्तेवेष्टि तन्वा विवेष्टि 2, 33, 13. विष्टी श-
मीभि: सुकृत: सुकृत्यया 3, 60, 3. 1, 110, 4. 10, 94, 2. — 3) fertig bringen so v. a. bewältigen, in die Gewalt bekommen: नव यत्पुरो नवति च स-
द्य: । निवेशेन शततमविष्टि: dass du 99 Festen an einem Tage, am Abend die hundertste gewannst RV. 7, 19, 5. 21, 4. अक्लिं वज्रेण 4, 22, 5. यो अल्प पारे (du.) रजसा विवेष्टि beherrscht 10, 27, 7. विवेष्टि यन्मा धिषणा 3, 32, 14. अकृत्यद्वज्रं नयं विवेष्टि: 10, 147, 1. 76, 3. — 4) eine Speise fer-
tig bringen so v. a. aufzehren NAGH. 2, 8. अन्ना वेविष्टि RV. 10, 91, 7. स उद्धतौ निर्वतौ याति वेविष्टि Agni 3, 2, 10. AV. 2, 12, 8.

— caus. bekleiden: ते वेषयित्वा स्त्रिविष्टे: सान्त्रम् BRĀG. P. 10, 1, 14.

VI. Theil.

— आ, hierher gehört आवेशन 3), welches demnach आवेषण zu schreiben wäre.

— उप besorgen, bedienen: उपवेशोपविष्टि न: TBR. 3, 3, 11, 1. ÇAT. BR. 1, 2, 1, 3. Unbestimmt lassen wir RV. 10, 61, 12. — Vgl. उपवेश.

— नि s. निवेष्टि.

— निस्, निर्विषन् unter परिविष fehlerhaft für निर्विषन्.

— परि, ○वेविष्पाणि, ○अवेविषम् P. 7, 3, 87. Schol. 1) bedienen, auf-
warten, namentlich Jmd (acc.) Speisen auftragen; Speisen zurüsten, an-
richten: दासा परिविषे (infln.) RV. 10, 62, 10. इमां देवतां परि वेवेष्मी-
त्येनं परि वेविष्प्यात् AV. 15, 13, 8. 9, 6, 53. अदितिं परिवेविषति AIT. BR. 1, 17. TBR. 2, 1, 2, 9. कनीया व्यापांसं परिवेवेष्टि KĀTṢ. 36, 7. पात्रैर्निर्विष्य परिवेविषति ÇAT. BR. 1, 3, 1, 2, 5, 1, 26. 9, 2, 2, 3, 2, 41. PĀNĀV. BR. 15, 7, 3. पर्यवेष्टिद्वज्रतोस्तान् MBH. 14, 2551. 3, 8619. अवेद्वज्रचारित्रास्त्रिभि-
र्विष्टे: — मन्त्रवत्परिविष्यते 13, 1618. fgg. (die ed. Bomb. an allen drei Stellen richtig ष). परिविष्यमाण so v. a. beim Essen seiend KĀND. UP. 4, 3, 5. अथो यथा प्रार्थनौषसं परिवेवेष्टि TBR. 2, 1, 2, 12. मन्त्रहीनं क्रिया-
हीनं यच्छादं परिविष्यते (so ed. Bomb.) MBH. 13, 1580. fg. अर्धसिद्धं प-
रिविष्यमाणम् (lies परिविष्य) MĀKṢ. P. 31, 33. परिविष्यमाणं विलोक्या-
भयम् BRĀG. P. 9, 9, 22. अन्नं परिविष्टं परिविष्ट्याणां च KĀTṢ. ÇR. Comm. 364, 17. पक्वं परिविष्टमग्नौ AV. 6, 122, 3. द्धिर्न जिह्वा परिविष्टमादत् RV. 10, 68, 6. — 2) pass. einen Hof bekommen oder haben (von Sonne und Mond): परिविष्यते SHADV. BR. 3, 10. HARIV. 12792 (सततं परिवि-
ष्यते die ältere, अभीष्टां परितप्यते die neuere Ausg.). आदित्ये परिवि-
ष्यमाणो GOBU. 4, 5, 25. परिविष्ट mit einem Hofe versehen MBH. 13, 982. fg. VARĀH. BRH. S. 34, 9. 15. — caus. Jmd (acc.) Speisen auftragen M. 3, 228. MBH. 1, 7182 (परिविष्य ed. Bomb. st. परिविष्य der ed. Calc.). R. 1, 13, 19 (पर्यवेशयन् 16 GORR.). R. GORR. 2, 36, 31 (falschlich ○वेष्ट्या). BRĀG. P. 10, 29, 6. — Vgl. परिविष्टि, परिवेष fgg. und परिवेष्टर fg.

— प्र desid. s. प्रवीचिन्तु in den Nachträgen.

— सम् 1) zubereiten, beschaffen: अग्रे संविष्टि रयिम् RV. 8, 64, 11.

— 2) kleiden: पिशाचवेषेण संविष्टि: HARIV. 14633.

2. विष् (= 1. विष्) 1) adj. aufzehrend in ऋद्धिष् Dürres aufzehrend.
— 2) f. = व्यापन MED. sh. 24.

3. विष् (nom. विष्ट) f. SIDDH. K. 247, b, 2 v. u. faeces AK. 2, 6, 2, 19. 3, 4, 26, 199. H. 634. MED. sh. 24. HALĀJ. 3, 15. SUÇA. 1, 107, 18. 2, 109, 1. विष्मूत्र (s. auch bes.) 1, 43, 15. 49, 21. JĀGĒ. 1, 152. BRĀG. P. 5, 26, 22. 6, 18, 24. 7, 14, 13. मूत्रविष्ट M. 3, 135. विष्मध्ये VARĀH. BRH. 23 (23), 8. VERZ. d. B. H. No. 929. ÇI. 42 (falschlich विशि). — Vgl. विष्ट, विष्टारिका, वि-
ष्टारि, विष्टार, विष्टूल, विष्टुङ्ग, विष्टारिका, विष्टारी, विष्टन्ध, विष्टुङ्ग, वि-
ष्टुत, विष्टु, विष्टुन्ध, विष्टुङ्ग, विष्टुङ्ग (auch BRĀG. P. 5, 3, 1), विष्टोद, विष्टोदिन्, विष्टोदिन्, विष्टुवण, विष्टुवाह (auch BRĀG. P. 2, 3, 19), वि-
ष्मूत्र, कर्ण°, गो°, धातु°, नेत्र°, बद्ध° und विष्टा.

4. विष्, वेष्टति (सेचने) DĀTUP. 17, 17.

5. विष्, विष्टाति (विप्रयोगे) DĀTUP. 31, 54.

1. विष्ट (von 1. विष्) m. 1) Diener, Aufwärter, Besorger RV. 8, 19, 11. 10, 109, 5. — 2) N. pr. eines Sādhja HARIV. 11337 (n. A.).

2. विष्ट (wie oben; eig. wirksam, bewältigend) 1) n. TRIK. 3, 3, 7. m. n. SIDDH. K. 249, b, 6. zu belegen nur n. a) Gift AK. 1, 2, 1, 10. TRIK. 1,